श्रीनिवास बालभारती

जयदेव

हिन्दी अनुवाद

डॉ. के. लीलावती

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति

श्रीनिवास बालभारती - 173

जयदेव

तेलुगु मूल

प्रो. चल्ल राधाकृष्ण शर्मा

हिन्दी अनुवाद

डॉ. के. लीलावती

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति
2015

Srinivasa Bala Bharati - 173
(Children Series)

JAYADEV

Telugu Version
Prof. Challa RadhaKrishna Sharma

Hindi Translation
Dr. K. Leelavathy

T.T.D. Religious Publications Series No. 1121
©All Rights Reserved
First Edition - 2015

Copies : 5000

Price :

Published by
Dr. D. SAMBASIVA RAO, I.A.S.,
Executive Officer,
Tirumala Tirupati Devasthanams,
Tirupati.

D.T.P:
Office of the Editor-in-Chief
T.T.D, Tirupati.

Printed at :
Tirumala Tirupati Devasthanams Press,
Tirupati.

दो शब्द

बच्चों का हृदय सुमनों की भांति निर्मल होता है। उत्तम कपूर से बढ़कर सुवासित उन के दिलों में बढिया संस्कार पैदा करना है। यदि उन में हम अच्छे संस्कार डालते हैं तो चिरकाल तक आदर्श जीवन बिताने के लिए सुस्थिर नींव पड जाती है। बचपन में संस्कार प्राप्त बच्चे भावी पीढियों के लिए समुचित मार्ग दर्शन कर सकते हैं। इसलिए हमारे इन होनहार बच्चों के लिए हमारी विरासत बने पौराणिक मूल्यों तथा इतिहास में निहित मानवता के मूल्यों का परिचय कराना अत्यंत आवश्यक है।

बिना लक्ष्य का जीवन निष्फल होता है। बच्चों को लक्ष्य की ओर प्रेरित कर उनके जीवन को सही मार्ग पर ले जाने की जिम्मेदारी बडों के ऊपर है। महान व्यक्तियों की आदर्शमय जीवनियों का परिचय करा कर उनमें प्रेरणा जगाने के उद्देश्य से 'श्रीनिवास बालभारती' का शुभारंभ किया गया है।

इस योजना का मुख्य लक्ष्य नैतिक मूल्यों के माधुर्य के बच्चों तथा सर्वत्र फैलाने का है। हमें यह जानकर अत्यंत आनंद हो रहा है कि बच्चे तथा परिवार के सभी लोग इन पुस्तकों का स्वागत कर रहे हैं। इससे तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् का मुख्य उद्देश्य कुछ हद तक सफल हो रहा है।

'श्रीनिवास बालभारती' की योजना तैयार करके उत्तम पुस्तकों का प्रकाशन करवा कर कम कीमत पर सब को उपलब्ध कराने का प्रयास, करनेवाले प्रो.एस.बी. रघुनाथाचार्य अभिनंदनीय हैं।

इस प्रकाशन में सहयोग देनेवाले लेखकों तथा कलाकारों के प्रति मैं अपना धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

कार्यकारी अधिकारी
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति

प्राक्कथन

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। अगर वे बचपन में ही महोन्नत सज्जनों की जीवनियों के बारे में जानकारी लें, तो अपने भावी जीवन को उदात्त धरातल पर उज्ज्वल रूप से जीने के मौके को प्राप्त कर सकते हैं। उन महोन्नत सज्जनों के जीवन में घटित अनुभवों से हमारी भारतीय संस्कृति, जीवन में आचरणीय मूल धार्मिक सिद्धान्तों तथा नैतिक मूल्यों आदि को वे निश्चय ही सीख सकते हैं। आज की पाठशालाओं में इन विषयों को सिखाने की संभावना नहीं है।

उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् के प्रचुरण विभाग ने डॉ.एस.बी. रघुनाथाचार्य के संपादन में स्थापित ''बाल भारती सीरीस'' के अन्तर्गत विविध लेखकों के द्वारा तेलुगु में रचित ऋषि-मुनियों व महोन्नत सज्जनों की जीवनियों से संबंधित लगभग १०० पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया। इनका पाठकों ने समादर किया और इसी प्रोत्साहन से प्रेरित होकर अन्य भाषाओं में भी इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया। प्रारम्भिक तौर पर इनको अंग्रेजी व हिन्दी भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है। इनके द्वारा बच्चे व जिज्ञासु पाठकों को अवश्य ही लाभ पहुँचेगा।

इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का उद्देश्य यही है कि बच्चे पढें और बडे लोग इनका अध्ययन कर, कहानियों के रूप में इनका वर्णन करें, तद्वारा बच्चों में सृजनात्मक शक्ति को बढा दें। फलस्वरूप बच्चों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा निश्चय ही बचपन में ही मिलेगी।

एडिटर-इन-चीफ

ति.ति.देवस्थानम्

स्वागत

श्रीनिवासदयोद्भूता बालानां स्फूर्तिदायिनी ।
भारती जयताल्लोके भारतीयगुणोज्ज्वला ।।

जब खण्डान्तरों में सभ्यता की बू तक नहीं थी तब भरतवर्ष अपनी सभ्यता, संस्कार,धर्म, नैतिकाचरण के लिए प्रसिद्ध हो गया था। जो इस पुण्य-भूमि पर जन्मता है वह धर्माचरण में स्थिर होकर अधर्म का सामना करता है और क्रमशः ईश्वराभिमुखी होकर यशोवान होता है। ऐसे महात्माओं के प्रभाव से हमारे जीवन इह-पर दोनों प्रकार लाभान्वित होते हैं। उनके आदर्शमय जीवनों से स्फूर्ति पाता है और समझता है कि मैं इस महान भारत का वारिस हूँ; परंपरागत इस संप्रदाय की रक्षा करना मेरा कर्तव्य है। ऐसी भावना से वह अपने देश की सेवा के लिए तैयार रहता है।

वास्तव में इस देश में कई धर्मात्मा, वीरपुरुष, वीरनारियाँ पैदा हुईं उन्होंने संस्कृति की दृढ नींव डाली है। हमारा भाग्य यही है कि हमारी पैतृक-संपदा के रूप में उज्वल इतिहास की परंपरा है। उनके आदर्शों के पालन करने से ही कोई विद्यावान-विज्ञानी बन सकता है। राष्ट्र के जीवन प्रवाह में वही विज्ञान अचल रहकर जीवन को सुशोभित करता रहता है। इसी सिलासले को आगे बढाने के लिए महात्माओं के जीवनियों को संक्षिप्त रूप में आपके सामने रखता हूँ।

हे भारत के भाग्यदाता बालक-आइए-स्फूर्ति पाइए

एस.बी. रघुनाथाचार्य
प्रधान संपादक

जयदेव

सुगंधरहित पुष्प

पेटभर खाना, बदन भर कपड़ा, आँख भर नींद ये तीनों हर एक व्यक्ति के लिए आवश्यक हैं। इसी प्रकार हर एक व्यक्ति के दिल में संतोष का भी रहना जरूरी है। तभी वह व्यक्ति अपना जीवन आनंदपूर्वक बिता पाएगा। धन संपत्ति हो सकते हैं, घर-बार भी हो सकते हैं, लेकिन मन में आनंद न हो तो ये सभी व्यर्थ हैं। संतोष रहित मानव का जीवन सुगंधहीन पुष्प के समान होता है।

सारी कविताएँ आनंद नहीं दे पाती

तो फिर ये आनंद कैसे लभ्य हो पाएगा? आम के पेड़ पर डालों की आड़ में बैठकर कोयल कुहु... कुहु... गान करता है। उसे सुनते ही हमें आनंद मिलता है। उसी प्रकार कोई अच्छा गीत या पद सुनते हैं तो हमें असीम आनंद की प्राप्ति होती है। मन की गहराइयों में छुपी हुई व्यथा कुछ समय के लिए ही सही हट जाती है। मधुर गीत और पद्य में इतनी महान शक्ति निहित है।

गीत और पद लिखनेवाले बहुत हैं। लेकिन सबके गीत और पद हमें आनंद नहीं दे पाते। कुछ लोगों की रचनाएँ ही हमें आनंद दे पाती हैं। ऐसे लोगों को हम अच्छे और महान कवि कहते हैं।

हमारे देश में महान कवियों का जन्म हुआ है। महान कवि आज भी हैं। ऐसे कवियों की गणना में जयदेव भी एक हैं। जयदेव की एक और विशेषता यह है, कि वे श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त हैं। इस कारण जयदेव केवल एक कवि ही नहीं वरन एक भक्त भी हैं। अर्थात् वे एक भक्त कवि हैं। अब उस भक्त कवि के बारे में हम जानकारी पाएँगे।

उनका जन्म कहीं भी क्यों न हुआ हो लेकिन वे तो जातिरत्न ही हैं

जयदेव का जन्म बंगदेश में हुआ, जिसे आजकल हम पश्चिम बंगाल के नाम से पुकारते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि वे तो उडिसा प्रान्त के हैं तो कुछ लोगों का कहना है कि वे मिथिला प्रान्त के हैं। कहा जाता है कि उड़िसा में बिल्वगाँव नामक गाँव में उनका जन्म हुआ है। यह गाँव पवित्र पुण्यक्षेत्र पूरी के नजदीक है। लेकिन कई पंड़ित लोगों का कहना है कि जयदेव का जन्म बंगदेश में ही हुआ है। सच तो यह है कि ऐसे महापुरुष देश के किसी भी प्रांत के ही क्यों न हो, लेकिन हमें समझना चाहिए वे संपूर्ण देश के वासी हैं। ऐसे लोग सभी भाषाओं के लोगों से संबंधित होते हैं और सभी प्रांतों से संबंधित होते हैं।

बंगदेश पर राज करने वाले अंतिम हिन्दू राजा का नाम है लक्ष्मणसेन। वे १२ वीं शती के उत्तरार्ध के माने जाते हैं। उनके राजदरबार में कई कवि और पंडित थे। उनमें प्रमुख हैं जयदेव। लक्ष्मण सिंह जी ने उन्हें ''कविराजू'' पद से सम्मानित भी किया। इसका अर्थ है कवियों में राजा समान। इसीलिए इसमें कोई शक नहीं है कि जयदेव एक महान कवि हैं।

प्रसिद्धि

जयदेव के पिता का नाम भोजदेव है। माँ का नाम है रमादेवी। वे वामा देवी नाम से भी जानी जाती है। जयदेव की पत्नी का नाम पद्मावती है। पद्मावती और जयदेव दोनों आनंदपूर्वक जीवन यापन करते थे। वे दोनों तोते मैना की तरह रहते थे। पद्मावती के मन में जयदेव के प्रति अपार भक्ति है। उसी प्रकार पद्मावती से जयदेव बहुत प्यार करते थे। उन दोनों से संबंधित कई मधुर कहानियाँ समाज में प्रचलित हैं। कह नहीं सकते कि इन कहानियाँ पर कितना विश्वास किया

जा सकता है फिर भी बहुत सालों से ये कहानियाँ समाज में पचलित हैं। इस कारण इनमें कुछ हद तक तो सच्चाई तो होगी। इसी दृष्टिकोण को लेकर हमें इन कहानियों को पढ़ना चाहिए और आनंदित होना चाहिए।

जयदेव के साथ विवाह संपन्न करो

पूरी क्षेत्र में भगवान जगन्नाथजी का मंदिर है। वे अत्यंत महिमान्वित भगवान हैं। उनके दर्शन पाने दूर-दूर से भक्त लोग आते हैं। इस कारण इस शहर को पूरी जगन्नाथ कहने में कोई आश्चर्य नहीं है।

इसी शहर में एक भक्त भी रहा करते थे। उनके लिए तो सर्वस्व जगन्नाथ ही हैं। निरंतर वे जगन्नाथ भगवान का ही स्मरण किया करते थे। वे महान भक्त थे। बेचारे, उनकी कोई संतान नहीं है। उनके जीवन की सबसे बड़ी कमी यही है। मन ही मन वे जगन्नाथ भगवान से संतान की प्रार्थना करते थे। इन्होंने भगवान से मिन्नत भी माँगी कि पहली संतान को वे उन्हें ही अर्पित भी करेंगे।

समय बीतता गया, उन्हें संतान की प्राप्ति हुई। घर में प्रथम संतान पुत्री हुयी। उन्होंने उस बच्ची का नाम पद्मावती रखा। वह बच्ची धीरे-धीरे बड़ी हो गयी।

पद्मावती को लेकर वे भगवान जगन्नाथ मंदिर गये। वहाँ उन्होंने भगवान से प्रार्थना की ''हे स्वामी मेरी इच्छा को आपने पूरा किया है, मैं अपनी बेटी को आपके समक्ष समर्पित कर रहा हूँ। स्वीकार कीजिए।'' उसी रात उन्होंने एक स्वप्न देखा। उन्हें स्वप्न में भगवान जगन्नाथ दिखाई दिए और भगवान ने उन्हें आदेश दिया ''हे भक्त! अपनी बेटी का विवाह जयदेव नामक भक्त के साथ कीजिए, यही हमारी इच्छा है।''

बस तुरन्त वे पद्मावती को साथ लेकर जहाँ जयदेव रहते थे वहाँ गये और अपने मन की बात उन्होंने जयदेव को सुनाया।

वे ही तुम्हारे रक्षक हैं

तब जयदेव ने जवाब दिया ''मैं बहुत गरीब आदमी हूँ। आपकी बेटी के लायक वर मैं नहीं हूँ।'' ''ऐसा मत कहो बेटा तुम्हीं उसके लायक वर हो। यह तो भगवान जगन्नाथ की आज्ञा है।'' पद्मावती के पिता ने जवाब दिया।

''आप मुझे क्षमा कीजिए।''

''मेरी बात को मत टालो। मैं अपनी बेटी को तुम्हारे पास ही छोडकर चला जाऊँगा। उसके बाद तुम्हारी मर्जी...'' इस प्रकार कहकर पद्मावती के पिता पद्मावती को देखकर इस प्रकार कहने लगे ''बेटी पद्मावती, ये जयदेव ही तुम्हारे पति हैं। तुम इनकी बातों का पालन करो और आनंदपूर्वक जियो। आप दोनों मिल जुलकर रहिए। आज से वे ही तुम्हारे रक्षक हैं।''

मैं आपके साथ ही रहूँगी

पद्मावती के पिता चले गये। पद्मावती वहीं काफी देर तक खड़ी रही। पद्मावती को लगातार देखने के बाद जयदेव के मन में दया जागी। कुछ देर बाद उन्होंने पूछा ''क्या तुम्हें डर नहीं लग रहा है।''

''आप मेरे पास हो तो मुझे डर क्यों लगेगा''

''सच''

''हाँ बिलकुल सच''

''क्या तब तुम इस गरीब की झोंपड़ी में रहोगी?''

''यही मेरा मन पसंद घर है, मैं आपके साथ ही रहूँगी।'' पद्मावती ने जवाब दिया।

पद्मावती की बातें जयदेव को अच्छी लगीं। वे यह सोचकर आनंदित हुए कि पद्मावती को सच में उनके प्रति प्यार है। उन्होंने यह निश्चय किया कि अगर वे शादी करेंगे तो उन्हीं से करेंगे। उसके बाद पद्मावती और जयदेव की शादी हो गयी। सभी आनंदित हुए।

धनवान न होने पर भी जो कुछ भी उनके पास है उसी में तृप्त होकर पद्मावती और जयदेव दोनों आनंद सहित जीवन यापन करने लगे। इस कहानी से आप को क्या सीख मिलती है?

पति-पत्नी को चाहिए कि वे एक दूसरे को अच्छी तरह समझें और मिलजुलकर दांपत्य जीवन बिताएँ। वे संतृप्त होकर जीवन यापन करें तभी वे जीवन के उतार-चढ़ावों का सामना करते हुए आराम से जीवन यापन कर पायेंगे।

मृत्यु को कौन टाल सकता है?

हमने जयदेव को महान कवि माना है ना! उस पर, उन्हें राजा का प्यार और आदर भी मिला है। इसी कारण महारानी को भी पद्मावती से प्यार हो गया है। इसके अलावा वैसे भी पद्मावती का स्वभाव भी बहुत अच्छा है। सबके साथ प्यार और सम्मान के साथ पेश आती थीं।

पद्मावती के प्रति महारानी का प्यार बढ़ता गया। धीरे-धीरे उनके बीच अच्छी दोस्ती भी हो गयी। जब भी समय मिलता वे दोनों बातें किया करती थीं। एक दिन दोनों बातें कर रही थीं, बीच में महारानी ने कहा कि ''हाल ही हमारे जीजाजी का देहांत हो गया है।''

‘‘हाँ, मैंने भी सुना है, और यह भी सुना है कि वे काफी बुजुर्ग भी हो चुके थे।’’

‘‘हाँ बुजुर्ग ही हैं... लेकिन जैसे ही उनकी मृत्यु की खबर मिली मेरा मन काफी उदास हो गया।’’

‘‘दुःखित होने केलिए कोई ठोस कारण मुझे दिखाई नहीं दे रहा है’’ पद्मावती ने अत्यंत सहजता से उत्तर दिया।

महारानी आश्चर्यचकित हुई। उन्होंने पद्मावती की ओर ऐसे देखा जैसे ‘‘क्या कह रही हो।’’ महारानी के चेहरे पर जो परिवर्तन दिखाई दिया उस परिवर्तन को पद्मावती जान नहीं पायी। पद्मावती ने कहा ‘‘आपके जीजाजी बुजुर्ग हैं। एक उम्र के बाद तो मृत्यु निश्चित है। असल में कोई भी मृत्यु को टाल नहीं सकते। अब तक किसी ने इसे टाला भी नहीं।’’ पद्मावती ने कहा।

मृत्यु सहज रूप से आ जाए तो ठीक है

महारानी को पद्मावती की बातें अच्छी नहीं लगीं। अब भी पद्मावती, महारानी के मन की बात जान नहीं पायी। दो मिनिटों तक किसी ने बात नहीं की। उसके बाद महारानी ने कहा ‘‘मेरी दीदी विवश होकर सती हो गयी...।’’

पति के मरने के उपरांत उसकी पत्नी, पति के साथ ही चिता में कूद कर प्राण दे दे तो उसे सती होना कहते हैं। उन दिनों ये प्रथा थी। आजकल नहीं है। पद्मावती ने आश्चर्य से पूछा ‘‘सती हो गयीं?’’

‘‘हाँ, हम सब उस दृश्य को देख नहीं पाए...’’

‘‘यह क्या कर दिया है आपकी दीदी ने! पति की मृत्यु की खबर सुनते ही अनायास उन्हें भी मृत्यु आ जाना चाहिए। इसे ही पतिव्रता

लक्षण कहते हैं। इसके विपरीत आग में कूद कर प्राण देना अच्छी बात नहीं है।’’

मेरी बातें आपको अच्छी नहीं लगीं है?

महारानी को ऐसा लगा जैसे उसके हृदय को किसी ने बाण से वार किया है। उन्होंने सोचा कि उनकी दीदी के सती होने की खबर सुनकर पद्मावती उनकी प्रशंसा करेंगी, लेकिन पद्मावती की बातें कुछ अलग ही थीं, इसे वे सहन नहीं कर पाई। इस कारण पद्मावती के प्रति महारानी को गुस्सा आ गया। द्वेष भी करने लगीं। जब किसी के मन में क्रोध और द्वेष साथ-साथ जागृत हों तो वह व्यक्ति ठीक से सोच नहीं पाता। अब रानी की दशा भी ऐसी ही थी।

महारानी ने कहा ‘‘न जाने क्यों मुझे सिर में दर्द होने लगा, मैं जाकर सो जाऊँगी।’’

अचानक महारानी के चहरे पर संतोष गायब होने की बात को पद्मावती ने जान लिया। वे सोचने लगीं कि महारानी की बातों में भी कुछ बदलाव आया है। अचानक आनेवाले इस बदलाव के कारण को जान न सकने के कारण पद्मावती दुःखित हुई। चाहे दोनों के बीच कितना ही अपनापन क्यों न हो फिर भी वे एक महारानी हैं और वह एक साधारण स्त्री ही है।

पद्मावती ने पूछा ‘‘महारानीजी मेरी किस बात पर आपको गुस्सा आया?’’

‘‘नहीं, नहीं... ऐसा कुछ नहीं है... सिर में दर्द हो रहा है‘‘

कहती हुई महारानी अपने कमरे में चली गयीं। उसके बाद पद्मावती भी अपने घर चली गयी। समय बीतता गया।

महारानी कितनी अच्छी है

महारानी के मन को शांति नहीं मिल रही थी। पद्मावती का नाम सुनते ही वे गुस्सा होने लगीं। पद्मावती से बदला लेने के लिए भी वे सोचने लगीं। वे सही समय की ताक में थीं। उन्होंने सोचा कि पद्मावती की पतिभक्ति की परीक्षा ली जाय। एक दिन राजा शिकार खेलने के लिए जाने को तैयार थे। उन्होंने जाते-जाते जयदेव को भी बुलाया। जयदेव भी उनके साथ चल पड़े।

इस प्रकार राजा और कवि दोनों, शिकार खेलने के लिए जाने के बाद महारानी को नींद नहीं आयी, वे मन ही मन खुश होने लगीं कि पद्मावती को परखने का सही समय आ गया है। उन्होंने सोचा देरी करना उचित नहीं है। तुरंत अपनी प्रिय सखी को अपने पास बुलायीं और अपनी मन की सारी बातें उससे कह ड़ालीं। काफी देर तक दोनों विचार-विमर्श करने लगीं। उसके पश्चात् महारानी ने दासी को पद्मावती के घर भिजवाया। थोड़ी देर बाद पद्मावती आयीं। पद्मावती का स्वागत स्वयं महारानी ने किया। वे कपट प्रेम जताने लगीं। महारानी की इस आत्मीयता को देखकर पद्मावती आश्चर्यचकित हो गयीं। इन्होंने मन ही मन सोचा कि महारानी कितनी अच्छी हैं। आगे सोचने लगीं कि स्वयं उसने ही महारानी को ठीक से समझा नहीं।

कवि अब दिखाई नहीं देंगे

वे दोनों बातों में डूब गई, उन्हें पता भी नहीं चला कि समय कैसे बीतता चला गया। इस प्रकार दोनों को बातें करते हुए कई दिन हो गए थे। उसी समय महारानी के पास वही दासी आई जो पहले बात कर

चुकी थी। वह दासी आकर महारानी के पास खड़ी हो गयी। इतने में रोने की आवाज सुनकर महारानी ने दासी की ओर देखा, और पूछा -

''क्यों री! ऐसे क्यों रो रही हो''

दासी ने कुछ जवाब नहीं दिया उसका रोना और भी बढ़ गया।

''क्या हुआ है'' आतुरता से पद्मावती ने प्रश्न किया।

''तुम से ही, ऐसे बुत बन कर क्यों खड़ी हो? क्या हुआ है, बोल नहीं सकती।'' कपटपूर्ण गुस्से से महारानी ने पूछा। ''महारानी क्या बताऊँ... जो बात हुई उसे मैं अपने मुँह से कैसे बताऊँ? कहती हुई दासी अपनी आँखे पोंछने लगीं।

''आखिर हुआ क्या है?''

''महारानी! महाराज...''

''हाँ!......'' महारानी ने रूँआसा चेहरा लेकर पूछा।

''महाराज कुशल होंगे, वे तो धर्म देवता हैं।...'' कहती हुई पद्मावती दीवार पर टंगी श्री कृष्ण के चित्रपट को देखने लगीं।''

''महारानी, आप जानती है ना महाराज और कवि मिलकर शिकार के लिए गये। वहाँ अचानक कहीं से एक शेर आया.......''

''शेर आकर''

''कवि के ऊपर हमला किया''

''उसके बाद'' पद्मावती की बातों में भी आतुरता दिखाई दी।

''यह बात मैं अपने मुँह से कैसे कहूँ?''

''कवि को तो कुछ हुआ नहीं न'' महारानी ने दासी के चेहरे को देखते हुए पूछा।

''कवि अब हमें दिखाई नहीं देंगे'' दासी ने धीरे से कहा।

राजा लोगों से दोस्ती...

महारानी अपना माथा टोकती हुई कहने लगीं ''हाय! कितनी दुर्घटना घट गयी! कवि जी नहीं रहें? अब हमें दिखाई नहीं देंगे! कितना अन्याय हो गया... आखिर वे शिकार के लिए गये ही क्यों... जाकर शेर के शिकार क्यों हुए... दुर्भाग्य... हाय! पद्मावती! तुम्हारे ऊपर कितनी मुसीबत आ पड़ी है... इस दुःख को कैसे सहन कर पाओगी...'' ऐसी कहती हुई, बीच-बीच में आँसू पोंछने लगीं।

''महारानी'' दासी ने चिल्लाया।

उसकी चीख को सुनकर महारानी ने दासी की ओर देखा। दासी ड़र के मारे थर-थर काँप रही थीं। उसके मुँह से शब्द नहीं निकल रहे थे।

''अब और क्या हुआ है?''

पद्मावती को देखती हुई वह दासी पत्थर की बुत बनकर खड़ी हो गयी। उसकी सूखी नजरों को देखकर महारानी डर गयीं। पद्मावती को देखने लगी।

पद्मावती जैसी बैठी थीं वैसी ही बैठी रह गयीं। आँखे बंद थीं। कहीं भी हिलने-डुलने के संकेत दिखाई नहीं दे रहे थे।

''हाय पद्मावती! मैंने तुम्हारे साथ कितना अन्याय किया है।'' कहती हुई महारानी ने पद्मावती के हाथ पकड़े। पद्मावती फर्श पर गिर गई। बदन ठंड़ा पड़ गया।

महारानी को डर लगने लगा। उनके हाथ पैर भी हिल नहीं रहे थे। मुहँ से शब्द नहीं निकल रहे थे। दासी तो थर-थर कांप रही थी। ये खबर

धीरे-धीरे सबको पता लग गया। खबर सुनने वाले सभी रोने लगे। पद्मावती के गुणों को याद कर दुःखित होने लगे।

''कैसा घोर अन्याय हो गया है।''

''शत्रुओं के साथ भी ऐसा नहीं होना चाहिए।''

''शायद महारानी ने कुछ किया है।''

''राजाओं के साथ दोस्ती नहीं करनी चाहिए।'' इस प्रकार सभी अपने अपने विचार व्यक्त करने लगे।

पद्मावती को प्राण दान

इतने में राजा और कवि के शिकार से लौटने की बात फैलती हुई महारानी तक पहुँच गई। इससे उनका ड़र और भी बढ़ गया। उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा था कि क्या किया जाय। वे अंदर ही अंदर जूझने लगीं कि अब वे अपना चेहरा राजा को कैसे दिखा पाएँगी?

इतने में महाराजा अंतःपुर आ गये। उनके साथ जयदेव भी थे। आते ही उन्होंने महारानी से प्रश्न किया ''क्या किया है?'' उनकी आँखे लाल थीं। उनकी बातों में बिजली की कड़क थी। इससे पहले वे कभी इस प्रकार दिखाई नहीं दिए थे। कांपती हुई महारानी नें सारी बाते सुना डालीं।

तब जयदेव के हाथों को पकडते हुए महाराजा ने अत्यंत दीनता से कहा ''आपके साथ हमने बहुत अन्याय किया है, क्षमा कीजिए।''

''महाराजा! इसमें आपकी कोई गलती नहीं है। ये सब भाग्य का खेल है।'' जयदेव ने जवाब दिया।

उसके बाद जयदेव, पद्मावती के पास बैठकर ''प्रिये! सद्गुण संपन्ना.....'' कहते हुए पत्नी के सद्गुणों को याद करने लगे। उसके बाद

अपने इष्ट देव श्रीकृष्ण की प्रार्थना में डूब गये। उस प्रार्थना के फलस्वरूप पद्मावती अपनी आँखे पोंछती हुई धीरे से उठकर ऐसी बैठ गयीं जैसी वे नींद से अभी-अभी जागी हों।

यह अलग से कहने की जरूरत नहीं है कि वहाँ उपस्थित सभी लोग इस दृश्य को देखकर आनंदित हो गए।

भगवान तो भक्तजनों के लिए तो वरदानदायी हैं। भक्त जनों से भगवान बहुत प्यार करते हैं। हर समय उनकी रक्षा करते रहते हैं। इसी तरह भक्त कवि जयदेव की रक्षा कर, भगवान ने सभी को आनंदित किया।

ऐसी कई कहानियाँ समाज में प्रचलित हैं। यें कहानियाँ यही सिद्ध करते हैं कि जयदेव कितने महान भक्त हैं। हमें यही प्रयास करना चाहिए कि इनका मुख्य उद्देश्य क्या है, यह समझे बिना इन कहानियों को बेसिर पैर की कहानियाँ सोचने लगेंगे तो हम कुछ भी समझ नहीं पायेंगे।

नित्यनवीन है गीत गोनिंद

जयदेव की मृत्यु कई सौ साल पहले हो चुकी है। आज भी हम उनका स्मरण करते आ रहे हैं। कल भी करेंगे। जयदेव आज हमारे बीच जीवित नहीं हैं, फिर भी उनके द्वारा रचित महान काव्य 'गीत गोविंद' आज भी जीवित है और सदा रहेगा। अर्थात् गीत गोविंद के माध्यम से जयदेव सदा ही जीवित रहेंगे। महान काव्य में उतनी शक्ति होती है। वास्तव में ऐसे कवि को सम्मान देने का यही अर्थ है कि उनके द्वारा रचित कोई भी पद या गीत को अगर हम निरंतर स्मरण करते रहें उस समय हमें यही समझना चाहिए कि उन्हें हम सम्मान ही दे रहे हैं।

गीत गोविंद का अर्थ

गीत गोविंद का अर्थ है गोविंद से संबंधित गीत। श्रीकृष्ण का एक अन्य नाम गोविंद है। गीतों में प्रधान तत्व संगीत है। इस तरह गीत गोविंद के लिए अनेक अर्थ बताए जा सकते हैं। जिसमें श्रीकृष्ण से संबंधित गीत हो या गीतों द्वारा श्रीकृष्ण के गुण-गान का वर्णन किया जाता है, वही गीत गोविंद है।

अष्टपद गीत

गीत गोविंद नामक संस्कृत काव्य में १२ सर्ग, २४ गीत, ९३ श्लोक हैं। हर एक गीत के आठ चरण होते हैं। इस कारण इन गीतों को अष्टपद नाम से भी जाना जाता है। तेलुगु प्रान्त में इन गीतों को जयदेव के अष्टपद नाम से जाना जाता है। असल में अष्टपद कहते ही जयदेव का नाम याद आ जाता है। इतनी महानता इन मधुर गीतों में है।

आज ही नहीं, बल्कि पहले भी इन गीतों ने अत्यंत नाम कमाया था। इस कथन का स्पष्टीकरण निम्न लिखित कहानी द्वारा स्पष्ट होता है।

जहाँ कहीं से भी सुनें...

जयदेव गीत गोविंद काव्य की रचना और उसका प्रचार भी हो चुका है। ये दोनों कार्य साथ-साथ हो चुके हैं। अर्थात् ये गीत शिक्षित और अशिक्षित लोगों को समान रूप से आकर्षित कर पाये। सभी लोग उन गीतों में निहित माधुर्य की सराहना करने लगे। उन गीतों को गाने लगे। गीत कोई भी हो, उस गीत के शब्द सहज और सरल होने चाहिए। उनमें माधुर्य होना चाहिए। दूसरा अर्थ यह भी है, उन गीतों को मनन करने से उनमें से मन को आनंदित करने वाले अर्थ निकलने चाहिए। तभी ये गीत लोगों के बीच व्याप्त हो पायेंगे। जयदेव के गीत इसी प्रकार के गीत हैं।

आपके गाने हमें अच्छे नहीं लगे

उन दिनों में उडिसा राज्य पर सात्यकी नामक राजा का शासन था। वे भी कविताएँ लिखते थे। भगवान जगन्नाथजी के गुणों की प्रशंसा करते हुए, उन्होंने भी कुछ गीतों की रचना कीं और उन्होंने लोगों को यह आदेश भी दिया कि वे सभी उनके द्वारा रचित गीत ही गाया करें। लेकिन लोग जयदेव रचित गीतों को ही गाया करते थे। कहा जाता है कि लोग जब जयदेव रचित गीत गाते थे तब भगवान आनंदित होकर नाचा करते थे। राजा ने जब देखा कि लोग उनके द्वारा रचित गीत नहीं गा रहे हैं तब वे दुःखित हुए। आखिर लोगों से उन्होंने पूछ ही लिया ''मेरे गीतों को आप क्यों नहीं गा रहे हैं?'' तब बिना झिझक के उन लोगों ने जवाब दिया ''हमें क्षमा कीजिए। हमें जयदेव के गीत जितने अच्छे लगते हैं उतने आपके गीत नहीं।'' जयदेव के गीतों से भगवान भी खुश हो जाते हैं।

अंतिम निर्णय भगवान जगन्नाथ का ही होगा!

इन बातों को सुनकर राजा और भी दुःखित हुए। लेकिन ये तो लोगों की धारणा है। उन्होंने सोचा लोगों के विचारों को गौरव देना ही उचित है। फिर उन्होंने इस प्रकार कहा ''आपके मत को मैं नकारूँगा नहीं, लेकिन एक बात... है।''

''कहिए राजा!''

''कुछ नहीं। मेरे गीत और जयदेव द्वारा रचित गीत दोनों को ले जाकर भगवान के पास रखेंगे। जिन गीतों को भगवान चाहेंगे उन्हें भगवान अपने पास रखेंगे। जिन गीतों को वे नहीं चाहेंगे, उन्हें भगवान ही मंदिर से बाहर रख देंगे। क्या आप इस परीक्षा के लिए सहमत हैं?''

''अवश्य'' सभी लोगों ने एक साथ कहा। उसी प्रकार राजा द्वारा रचित गीत और जयदेव के अष्टपदों को मंदिर में ले जाकर भगवान के समक्ष रख दिया और बाहर ताला भी लगा दिया। दूसरे दिन सुबह होते ही राजा बहुत आशा के साथ भगवान के मंदिर पहुँचे। उनके साथ और लोग भी पहुँच गए। महान आश्चर्य! राजा के द्वारा रचित गीत मंदिर के बाहर थे। जयदेव द्वारा रचित गीत भगवान के सान्निध्य में थे। सब लोगों ने मिलकर कवि जयदेव की प्रशंसा की। आनंदित होकर तन्मयता से उनके गीत गाने लगे।

भगवान की आज्ञा को नकारना नहीं चाहिए

राजा बेचारे शर्मिंदा हुए। इनका चेहरा सिकुड़ गया, मन में दुःख भी हुआ। उन्होंने सोचा ''हाय! सब जानकारी रखनेवाले भगवान, भी इतने पक्षपाती हैं। आखिर मैंने क्या गलती की है! मेरे गीत क्यों नहीं अच्छे लगे।''

लेकिन राजा स्वभाव के अच्छे थे, ज्ञानी थे, इस कारण उन्होंने अपने मन ही मन इस प्रकार सोचा ''यह तो भगवान की आज्ञा है, इसे नकारना ठीक नहीं है। मुझे भी जयदेव के गीतों की प्रशंसा करनी चाहिए। सबकी तरह गाना भी है।''

वे ही टिके रहेंगे

उसके बाद राजा ने जयदेव के द्वारा रचित गीतों की बहुत प्रशंसा की। वे भी लोगों के साथ मिलकर आनंदित होकर इन गीतों को गाने लगे।

जयदेव कितने महान भक्त हैं, और उनके द्वारा रचित गीत कितने महान हैं। राजा महान हो सकते हैं वे सबका पालन करने वाले भी हो

सकते हैं। जयदेव गरीब है, और अत्यंत साधारण मानव हैं। इसमें क्या है! वे महान भक्त हैं और महान कवि भी हैं। उनके गीतों में माधुर्य है। इस कारण उनके गीत लोगों की प्रशंसा के पात्र बने। मैं राजा हूँ, मेरे गीतों को ही आप को गाना चाहिए-ऐसा कहने के बावजूद भी लोग उन गीतों को जिन्हें वे पसंद नहीं करते, उन्हें नहीं गाते हैं। लोग जिन्हें चाहते हैं उन्हीं को पढ़ंगें और गायेंगे। उसी प्रकार के गीत और कविताएँ बहुत समय तक स्थिर रहेंगे। यही इस कहानी की नीति है।

दशावतार

गीत गोविंद काव्य, भगवान की प्रार्थना से आरंभ होता है। उसके बाद विष्णु भगवान के दशावतारों का वर्णन अत्यंत मनोहर ढ़ंग से वर्णित किया गया है। मत्स्यावतार(मछली), कूर्मावतार(कछुवा), वराहावतार(सुअर), नरसिंहावतार, वामनावतार, परशुरामावतार, रामावतार, बलरामावतार, बुद्धावतार, कल्की अवतार-इन्हें ही दशावतार कहते हैं। उसके बाद इन दस अवतारों का वर्णन एक श्लोक में प्रस्तुत किया गया है।

इन दशावतारों का वर्णन जितना प्रसिद्ध हुआ है, उसी प्रकार एक श्लोक, जिसमें दशावतारों का वर्णन किया गया है, वह श्लोक भी उतना ही प्रसिद्ध हुआ है।

मत्स्यावतार

जयदेव ने मत्स्यावतार का वर्णन जिस मधुरता से किया है, यह हम उन्हीं के मधुर शब्दों में पढ़कर आनंद पाएँगे।

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम्
विहित वहित्र चरित्र मखेदम्

केशव! धृत मीनशरीर!
जय जगदीश हरे! ध्रुवम्

अर्थात् ''हे कृष्ण! हरी! जगदीश! आपका जय हो! प्रलय समय में जब सारे समुंदर एक हो गए और संपूर्ण विश्व जलमय हो गया था उस समय आप ने मछली का रूप धारण कर वेदों की रक्षा की।''

प्रलय का अर्थ है युग का अंत। कृत युग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग नामक चार युग हैं। अब हम जिस युग में रह रहे हैं वह कलियुग है। एक-एक युग का अंत जब होता है उस समय सारे समुद्रों में उफान आता है। उस समय संपूर्ण विश्व पानी से भर जाता है। उन परिस्थितियों की कल्पना करते हुए भी डर लग रहा है ना! ऐसे प्रलय काल के समय भगवान ने मत्स्यावतार धारण किया और अत्यंत पवित्र वेदों की रक्षा की है।

नरसिंहावतार

जयदेव ने नरसिंहावतार का वर्णन जिस प्रकार किया है, उसे देखेंगे।

तव कर कमलयुगे नखमद्भुत शृंगं
दलित हिरण्यकशिपु वरभृंगम्
केशव! धृतनरहरिरूप!
जय जगदीश! हरे! ध्रुवम्

अर्थात् ''हे कृष्ण! जगदीश! हरी! आपका जय हो। आपने नरसिंहावतार धारणकर कमल जैसे अपने हाथों के नखों से भ्रमर जैसे हिरण्यकशिपु के शरीर को चीर डाला।''

देखकर चुप रहेंगे क्या?

आप सब लोग प्रह्लाद की कथा से अवगत ही है। प्रह्लाद परम भक्त हैं। विद्वानों का कथन हैं ''प्रह्लादो जन्म वैष्णवः'' इसका अर्थ है जन्म से ही प्रह्लाद विष्णु भक्त थे। इस प्रकार के महान भक्त को उनके पिता हिरण्यकशिप ने कई प्रकार की यातनाएँ दीं। वे भगवान विष्णु के प्रति क्रोधित हुए और अपने ही पुत्र की ममता को छोडकर, उन्हें मरवा दिये। अपना भक्त जब इस प्रकार की यातनाएँ सह रहा है तब भगवान क्या चुपचाप देखते रह पाएँगे? इसीलिए उन्होंने नरसिंहावतार (आधा मानव का शरीर-आधा सिंह का शरीर) धारण कर अपने भक्त को कष्ट देने वाले व्यक्ति का संहार कर दिया। इस प्रकार उन्होंने अपने भक्त की रक्षा की।

दशावतार स्तुति

केवल एक ही श्लोक में जयदेव ने दशावतार की स्तुति की है, उसे हम देखेंगे।

वेदानुद्धरते, जगन्निवहते भूगोलमुदिबभ्रते,
दैत्यान्दारयते, बलिं छलयते, क्षत्रक्षयं कुर्वते,
पौलस्त्यं जयते, हलम् कलयते, कारुण्य मातन्वते,
म्लेच्छान् मूर्छयते, दशाकृति कृते कृष्णाय तुभ्यं नमः

अर्थात् ''हे कृष्ण! आपने वेदों की रक्षा की है। धरती का भार ढोकर इस भूमंडल को आपने अपने ऊपर उठाया है। राक्षसों का संहार किया। सम्राट बली को धोखा दिया। राजाओं का संहार किया। रावणासुर के ऊपर विजय पाया, हल को उठाकर हाथ में लिया। सब लोग को दया से रहने के लिए उपदेश दिया। क्रूर लोगों को सजा दिलवाया। इस प्रकार दस अवतार धारण करने वाले आपको मेरा प्रणाम।

इतने अवतारों की आवश्यकता क्यों

भगवान भक्तों की रक्षा करने वाले ही नहीं बल्कि जब भी जरूरत पडती है वे बुरे लोगों को सजा भी देते रहते हैं। सदा अच्छे लोगों की रक्षा करते रहते हैं। बुरे लोगों की बुरी आदतों के कारण सब लोगों को कष्टों का सामना करना पडता है। इस कारण अधर्म बढ़ जाता है। इसलिए बुरे लोगों को सजा देकर धर्म की रक्षा करना ही भगवान का काम है। इसी कारण भगवान विष्णु को इतने अवतार धारण करने पड़े। हर एक अवतार में उन्होंने सदा बुरे लोगों को सजा दी और धर्म की रक्षा की। अगर ऐसा न हुआ होता तो मानव को अच्छाई पर से विश्वास उठ जाएगा। अगर अच्छाई कम हो जाय तो इस लोक में सुख-शांति नहीं मिलेगी। इस लोक में अगर सुख-शांति स्थिर रूप से कायम रखने की इच्छा रखते हैं तो अच्छाई को स्थिर रूप से कायम रखना आवश्यक हो जाता है। अर्थात् धर्म की स्थापना होनी ही चाहिए।

गीत गोविंद किसे आकर्षित नहीं कर पाता है?

कहा जाता है कि जब जयदेव गीत गोविंद के गीतों को गाते थे तब पद्मावती इन गीतों के अनुकूल नाट्य किया करती थी। एक बात तो स्पष्ट है। आज भी ये गीत समाज में प्रचलित हैं। क्योंकि इसका कारण यही हो सकता है कि हमारे यहाँ के गायक और नाट्य शास्त्र में निपुणता रखने वाले इन गीतों के प्रति आदर और प्रेम दिखाते हैं। सुन्दर शब्दों के साथ माधुर्य गीत लिखने में जयदेव प्रसिद्ध हैं। इतना ही नहीं, उचित शब्दों को संदर्भानुसार उपयोग में लाने का रहस्य जयदेव जानते हैं। अर्थात् संदर्भ के अनुसार वे शब्दों का उपयोग करते हैं।

कुछ लोग बडे-बडे शब्दों का उपयोग कर अपनी महानता को व्यक्त करते हैं। कुछ लोग साधारण शब्दों का ही प्रयोग करते हैं। लेकिन

ऐसे शब्द बहुत ही नीरस होते हैं। आँखे देखा हाल की तरह कुछ लोग वर्णन करते हैं जैसे कोई युद्ध वर्णन आदि। लेकिन जयदेव संदर्भ के अनुकूल शब्दों का प्रयोग करते हैं। वे सभी रसों का सुन्दर वर्णन करते हैं। इसी कारण जयदेव रचित गीत गोविंद उन पंडितों को आकर्षिक करता है जिन्हें शब्दों के प्रति लगाव है। भावों के प्रति प्रेम जताने वाले सभी कवियों को गीत गोविंद आनंद प्रदान करता है। सुन्दर गीतों के लिए तरसने वाले गायाकों को गीत गोविंद अपने वश में कर लेता है। चित्रकार, शिल्पी, जैसे कई लोगों को 'गीत गोविंद' अपनी ओर आकर्षित कर पाया है।

अष्टपद का आश्रय लेकर

इतना ही क्या! 'गीत गोविंद' काव्य के लिए संस्कृत में ही कई व्याख्यायें निकली हैं। एक विषय के अर्थ के स्पष्टीकरण के लिए व्याख्यान की संज्ञा दी जाती है। कहा जाता है कि 'गीत गोविंद' की व्याख्यायें लग-भग पचास तक मिलती हैं। 'गीत गोविंद' की तरह लिखने के उद्देश्य से कुछ कवियों ने गीतगोविंदम, गीतामाधव आदि कई प्रकार की रचनाएँ की हैं। कहते हैं कि इस प्रकार की रचनाएँ लग-भग १३५ तक रची गयी हैं।

उडिसा में और हमारे देश के कुछ प्रांतों में गीतगोविंद के गीतों को मंदिरों में गाने की प्रथा है। यह 'गीतगोविंद' काव्य तेलुगु भाषा - भाषियों के लिए भी प्रीतिदायक रहा है। गद्वाल प्रांत के शासक सोमभूपाल नामक राजा ने गीतगोविंद काव्य को लेकर संस्कृत एवं तेलुगु में व्याख्यान देते हुए अष्टपदों की रचना की हैं। मणिगोंडा वेंकटरमण कवि, पतिकि श्रीनिवासराव, मेका वेंकटाद्रि अप्पाराव आदि साहित्यकारों ने गीतगोविंद काव्य को तेलुगु में रूपांतरण किया है। ए.वी नरसिंहराव,

सूराबत्तुला सूर्य नारायणा, मल्लादि लक्ष्मीनरसिंह शास्त्री आदि साहित्यकारों ने संस्कृत श्लोकों को लेकर तेलुगु में टीका - टिप्पणी लिखी। चल्ला पुच्चय्या शास्त्री ने गीतगोविंद काव्य को तेलुगु में अनूदित किया। जयदेव को प्राप्त उपाधियों में 'अभिनव जयदेव' भी एक है। इस प्रकार न जाने कितने लोगों ने इस काव्य को लेकर तेलुगु में रूपांतर किया है और कितनों ने टीका - टिप्पणी की हैं, नहीं मालूम।

एक वाक्य में यह कह सकते हैं कि गीतगोविंद काव्य ने कई लोगों को आनंदित किया है और अब भी आनंदित कर रहा है। कई लोगों के दिलों में अमिट छाप छोड चुका है।

मधुर भक्ति ही सही राह

भगवान के प्रति जो प्रेम दिखाते हैं, हम उसे भक्ति का नाम देते हैं। इसे ही नौविधा भक्ति कहते हैं। भगवान की कृपा को प्राप्त करने के लिए भक्ति सहायक होती है। अगर अशिक्षित लोगों के दिल में भक्ति है तो काफी है, वे भी भगवान के प्रिय पात्र बन जाते हैं। कवि वेमना ने कहा कि

भक्ति युन्न चोटा परमेश्वरुन्डुंडु
भक्ति लेनि चोट पापमुंडु
भक्ति गलुगुवाडु परमात्म तानया
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा ।।

अर्थात् ''जहाँ भक्ति है वहाँ भगवान हैं। जहाँ भक्ति नहीं है वहाँ पाप रहता है। जिस भक्त में भक्ति है वे स्वयं भगवान समान माने जाते हैं।''

कुछ लोग प्रेम के आधार पर भगवान के कृपा पात्र बनते हैं। कुछ लोग भगवान से दुष्मनी कर अंत में मोक्ष प्राप्त करते हैं। हमने कहा है कि जयदेव कृष्ण के भक्त हैं। उन्होंने मधुर भक्ति के द्वारा भगवान की आराधना की। जो लोग मधुर भक्ति पर विश्वास रखते हैं उनके लिए कृष्ण ही एक मात्र पुरुष हैं। बाकी सभी लोग स्त्री जात के ही हैं। इस प्रकार भगवान कृष्ण को पाने के प्रयास में लीन होना चाहिए। उनके लिए मधुर भक्ति ही एक मात्र रास्ता है।

शपथ

जयदेव ने श्रीकृष्ण को श्रृंगार पुरुष माना है। इसीलिए उन्होंने अपने गीतगोविंद काव्य में राधा - कृष्ण के प्रेम का वर्णन किया है। फिर भी उन्होंने अपने काव्य के आरंभ में यही लिखा है कि जो लोग हरि नाम का स्मरण करना चाहते हैं उनके लिए यह काव्य उपयोगी होगा।

यदि हरिस्मरणे सरसं मनो
यदि विलास कलासु कुतूहलम् ।
मधुरकोमल कांत पदावलीं
शृणु तदा जयदेव सरस्वतीम् ।।

अर्थात् ''आप लोगों में हरि नाम के स्मरण की सच्ची इच्छा हो, कलाओं में से श्रृंगार के प्रति आसक्ति हो, तब आप आनंद पहुँचाने वाले मधुर शब्दों में रचित जयदेव के गीतों को ही सुनिए।''

इसी प्रकार गीतगोविंद काव्य के अंत में भी जयदेव ने अपने काव्य में निहित महानता का वर्णन किया है। उनके द्वारा रचित गीतों में संगीत की प्रधानता है। वे श्रृंगारपरक गीत हैं। उसी प्रकार वे गीत भगवान विष्णु से भी संबंधित भी है।

इनकी कृपा सब के लिए आवश्यक है

जयदेव के गीतों में प्रेम का वर्णन है और वह प्रेम कृष्ण से संबंधित है। प्रेम के द्वारा ही उन्होंने भगवान की सेवा की और मुक्ति पाई। यह कहते हुए कवि जयदेव ने अपने गीत गोविंद काव्य की समाप्ति की है कि प्रेम स्वरूप, भक्तसुलभ, पुरुषोत्तम, श्रीकृष्ण के अभयहस्त हमें सदा सुख - शांति प्रदान करें।

अनुसरण करने के रास्ते अलग हो सकते हैं। कृपालु भगवान के रूप अनेक हो सकते हैं लेकिन भक्तों का लक्ष्य तो एक ही होता है। उनकी इच्छा यही है कि वे सदा भगवान के कृपा पात्र बनें रहे। चाहे किसी भी पथ का अनुसरण करें, किसी भी भगवान की सेवा करें, लेकिन भक्त जन सदा ही स्मरण करने योग्य होते हैं। श्रीकृष्ण के भक्त जयदेव भी ऐसे ही हैं।

अन्य रचनाएँ

जहाँ संगीत सुनाई दे और जहाँ नाट्य दिखाई दे, वहाँ अवश्य जयदेव के गीत अपनी जगह बना लेते हैं। उनके गीत संगीत एवं नाट्य के लिए प्रसिद्ध हैं। जयदेव कृष्ण भक्त हैं। कुछ लोगों का कहना है कि जयदेव ने भगवान कृष्ण की रचनाएँ ही नहीं रची बल्कि अन्य रचनाएँ भी की हैं। कहते हैं कि 'सदुक्ति कर्णामृतम्' नामक पुस्तक में उनके द्वारा लिखे गए २६ श्लोक हैं। ये सभी वीर रस प्रधान श्लोक हैं। चाहे कुछ भी हो जयदेव का नाम सुनते ही हमें मधुर शब्दों से युक्त सुन्दर गीतों की ही याद आती हैं।

हमारे कानों को सुख पहुँचाने वाले गीतों का दूसरा नाम ही जयदेव है। महुआ फूल, शहद, शक्कर, अंगूर, अमृत, दूध, और आम फल से

भी बढ़कर जयदेव के गीत मीठे होते हैं। इतने मीठे गीतों को लिखने वाले जयदेव को हम भूल नहीं पायेंगे।

कोई उनकी बराबरी नहीं कर सकते

गीतगोविंद एक महान गेय काव्य है। संस्कृत में इससे बढ़कर अन्य गेयकाव्य दूसरा नहीं है। इतने मधुर काव्य लिखने वाले जयदेव चाहे वे पश्चिम बंगाल में ही जन्में हो, फिर भी वे पूरी जगन्नाथ भगवान के भक्त ही हैं। इसी कारण उनके द्वारा रचित गीत आज भी उडिसा में बहुत प्रचलित हैं। इसमें आश्चर्य की कोई बात ही नहीं है।

हमने पहले ही कहा है कि महान भक्त और महान कवि चाहे वे किसी भी प्रांत के क्यों न ६७ हों, वे हमारे ही देश के वासी हैं। इस कारण हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि जयदेव का जन्म पश्चिम बंगाल में हुआ है और उन्होंने संस्कृत में लिखा है। महान पुरुषों को हम इस प्रकार एक प्रांत से या एक भाषा से जोड नहीं सकते हैं। पश्चिम बंगाल में जन्म लेनेवाले भारतीय हैं जयदेव। संस्कृत में काव्य रचने वाले भारतीय कवि जयदेव हैं। इस प्रकार से हमें उस महान पुरुष को याद करना चाहिए।

अपने मधुर गीतों से कई लोगों को अपने वश में करनेवाले महान गेय कवि जयदेव हैं। अपने गीतों से भगवान को भी तृप्त करनेवाले हैं भक्त कवि जयदेव। कोई उनकी बराबरी नहीं कर सकता।

* * *